P-18
फिर चमकेगी 'शुद्धि' में रणबीर-दीपिका की जोड़ी

www.samaylive.com
राष्ट्रीय सहारा
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्तव्य • समर्पण

P-16
टी-20 विश्व कप में भारत-वेस्टइंडीज का मुकाबला आज

• देहरादून • नई दिल्ली • लखनऊ • गोरखपुर • पटना • कानपुर • वाराणसी से प्रकाशित
देहरादून। रविवार • 23 मार्च • 2014
नगर संस्करण, पृष्ठ 18+4 (संडे उमंग), वर्ष-7, अंक-2321 मूल्य ₹ 2.50

कृषि क्षेत्र में नये प्रयोगों की जरूरत : डा. सामरा

देहरादून (एसएनबी)। भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संघ व केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान के तत्वावधान में मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम विषय पर आयोजित तीन दिवसीय गोष्ठी शुरू हो गई। गोष्ठी में उत्तर भारत के पांच राज्यों के साथ ही दिल्ली, एनसीआर एवं चंडीगढ़ के किसानों के अनुभवों के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व मृदा एवं जल संरक्षण आदि विषयों पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

- डा. एसआर सिंह को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड
- मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण के लिए कृषक प्रथम संगोष्ठी आयोजित

आईएसबीटी स्थिति इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स के भवन में आयोजित संगोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि राष्ट्रीय बागवानी क्षेत्र कृषि प्राधिकरण नई दिल्ली के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डा. जेएस सामरा ने किया। विशिष्ट अतिथि उप महानिदेशक प्राकृतिक संसाधन प्रबंध डा. एके सिक्का ने प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन तथा मृदा एवं जल संरक्षण से जुडे मुद्दों पर विचार रखे। उन्होंने समेकित विकास की आवश्यकता पर जोर दिया। मुख्य कार्यकारी निदेशक राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड मधुमिता मुखर्जी ने मत्स्य पालन के क्षेत्र में जलागम प्रबंध एवं ग्रामीण विकास से जोड़ने तथा मत्स्य विकास द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों एवं उनकी संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

इस मौके पर उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों को उनके योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया। डा. एसआर सिंह को लाइफ टाइम अचीवमेंट जबकि डा. ओपीएस खोला, डा. जगदीश प्रसाद एवं डा. एसएल पाटिल को आईएएसडब्ल्यूसी फैलो अवार्ड प्रदान किया गया। डा. एनके लेंका को यंग वैज्ञानिक व डा. अंबरीश कुमार व डा. विश्वजीत मंडल को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार से सम्मानित कयिा गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रदेशों से आये कृषकों ने अपने अनुभव भी बांटे तथा वैज्ञानिकों के साथ विचार विमर्श किया। कार्यक्रम में केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक पीके मिश्रा, जीपी जुयाल, ओपी चतुर्वेदी, एनके शर्मा व डा. चरण सिंह आदि मौजूद थे।

रविवासरीय
हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया

केजरीवाल को काले झंडे

हरियाणा के फरीदाबाद में 'आप' के नेता अरविंद केजरीवाल को शनिवार को रोड शो के दौरान काले झंडे दिखाए गए।

उत्तराखंड आपदा में शहीद विंग कमांडर को कीर्तिचक्र पेज 11
रोमांचक मैच में दक्षिण अफ्रीका से जीता श्रीलंका पेज 16

रविवार, 23 मार्च 2014, देहरादून, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर संस्करण www.livehindustan.com वर्ष 5, अंक 12, 18 पेज+4 पेज मूवी मैजिक, मूल्य ₹ 3.00/ हिन्दुस्तान टाइम्स के साथ मूल्य ₹ 6.00

किसानों और वैज्ञानिकों ने साझा किए अनुभव

देहरादून | हमारे संवाददाता

मृदा और जल संसाधन संरक्षण के लिए कृषक प्रथम की ओर से हुई सेमिनार में नए प्रयोग करने वाले किसानों का चयन किया गया। इन चयनित किसानों के अनुभवों और विचारों पर वैज्ञानिक और कार्यकर्ता विचार-विमर्श करेंगे।

शनिवार को भारतीय मृदा और जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान ने संयुक्त रूप से सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार में उत्तर भारत के पांच राज्यों हरियाणा, पंजाब, हिमाचल-प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू कश्मीर के साथ-साथ चंडीगढ़ से आए किसानों की समस्याओं पर चर्चा की गई। इसमें किसानों के अनुभव के आधार पर प्राकृतिक संसाधन सरंक्षण, मृदा और जल सरंक्षण, संरक्षित कृषि के बारे में बताया गया। सेमिनार में मुख्य अतिथि मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. जेएस सामरा ने नए प्रयोगों को समय की मांग, जलवायु पविर्तन और सामाजिक आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुरूप अपनाने पर जोर दिया। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों को उनके योगदान के लिए पुरस्कृत भी किया गया। इस अवसर पर पीके मिश्रा, डॉ. जीपी जुयाल, डॉ. ओपी चतुर्वेदी, डॉ. एनके शर्मा, डॉ. चरण सिंह आदि लोग उपस्थित रहे।

इन्हें मिला पुरस्कार

- डॉ. एसआर सिंह-लाइफ टाइम अचीवमेंट
- डॉ. ओपीएस खोला-आईएसडेब्लूसी फैलो
- डॉ. जगदीश प्रसाद-आईएसडेब्लूसी फैलो
- डॉ. एसएल पाटिल-आईएसडेब्लूसी फैलो
- डॉ. एनके लेंका-यंग वैज्ञानिक
- डॉ. अंबरीश कुमार-सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र
- डॉ. विश्वजीत-सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र

- मृदा और जल संसाधन संरक्षण पर आयोजित हुआ सेमिनार
- पांच राज्यों से आए किसानों ने बताई अपनी समस्याएं

वर्ष 17 अंक 321
पृष्ठ 24+4=28
देहरादून, रविवार
23 मार्च 2014
नगर संस्करण
मूल्य ` 3.50

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

तीन महीने बाद फिर जेल पहुंचे संजय दत्त 23 भाजपा जनता को अधिकार देना नहीं जानती 23

www.jagran.com उत्तराखण्ड • दिल्ली • उत्तर प्रदेश • मध्य प्रदेश • हरियाणा • बिहार • झारखंड • पंजाब • जम्मू-कश्मीर • हिमाचल प्रदेश • पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

मृदा व जल संरक्षण में नए प्रयोग जरूरी

- देश के विभिन्न हिस्सों से किसानों ने लिया संगोष्ठी में हिस्सा
- संगोष्ठी में किसानों के हिसाब से तकनीक विकसित करने पर दिया जोर

जागरण संवाददाता, देहरादून: भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संघ व केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान की संयुक्त संगोष्ठी में किसानों के हिसाब से तकनीक विकसित करने पर बल दिया गया। संगोष्ठी में उत्तराखंड समेत जम्मू कश्मीर, चंडीगढ़ व दिल्ली एनसीआर क्षेत्र से बड़ी संख्या में किसानों ने हिस्सा लिया।

शनिवार को 'कृषक प्रथम' संगोष्ठी का शुभारंभ नेशनल रेनफेड अथारिटी के सीईओ डॉ. जेएस सामरा ने किया। उन्होंने कहा कि कृषि व जलागम के क्षेत्र में समय की मांग, जलवायु परिवर्तन व सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं को अपनाने के साथ-साथ कृषकों की राय भी जरूरी है। कार्यक्रम में नवीन प्रयोग करने वाले कृषकों का चयन किया गया, जिनके अनुभवों के आधार पर किसानों के लिए सरल तकनीक विकसित की जाएगी। निदेशक डॉ. पीके मिश्रा ने परंपरागत तकनीकी ज्ञान आधारित मृदा व जल संरक्षण की विधियों के बारे में बताया।

इसके साथ ही कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए डॉ. एमआर सिंह को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया। डॉ. ओपीएस खोला, डॉ. जगदीश प्रसाद व डॉ. एसएल पाटिल को आइएसडब्ल्यू फैलो अवार्ड दिया गया। वही, डॉ. एनके लेंगा को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार, डॉ. अंबरीश कुमार व डॉ. विश्वजीत मंडल को सर्वश्रेष्ठ शोधपत्र पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर उपमहानिदेशक डॉ. एके सिक्का, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड के डॉ. एके सिक्का आदि उपस्थित थे।

दून दर्पण

♦वर्ष 54 ♦अंक 340 रविवार 23 मार्च 2014 ♦मूल्य 2.00 ♦पृष्ठ 08

डा.- एस आर सिंह को लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड

कार्यालय संवाददाता

देहरादून, २२ मार्च। नवीन प्रयोग करने वाले किसानो के अनुभवों पर विचार विमर्श करने के लिए ' मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम' विषय पर संगोष्ठी मे डा० एसआर सिंह को लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया।

आज यहां भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संघ एवं केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संयुक्त रूप से " मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम" विषय पर उत्तरी क्षेत्र हेतु तीन दिवस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

संगोष्ठी में उत्तर भारत के पांच राज्यों हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड एवं जम्मू और काश्मीर के साथ ही दिल्ली एनसीआ एवं केन्द्र शासित चण्डीगढ की समस्याओ व वहां से आये किसानो के अनुभवो के आधार पर प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, मृदा एवं जल संरक्षण, समेकित जलागम प्रबंध, संरक्षित कृषि, समेकित कृषि प्रणालियो इत्यादि पर विचार विमर्श किया जा रहा हैं। यह संगोष्ठी अपने आप में अनोखी है जिसमें नवीन प्रयोग करने वाले किसानों का चयन किया गया है जिनके विचारो एवं अनुभवो पर वैज्ञानिक एवं कार्यकर्ता विचार विमर्श करेगें।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा० जेएस सामरा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी राष्ट्रीय बारानी क्षेत्र कृषि प्राधिकरण ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे इन नये प्रयोगो को समय की मांग, जलवायु परिवर्तन तथा सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुरूप अपनाने पर जोर दिया। डा० सामरा ने डा० केजी तेजवानी की स्मृति में अपना भाषण प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि ने उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिको को उनके योगदान हेतु पुरस्कार वितरित किया। डा० एसआर सिंह को लाइफ टाईम अचीवमेट (अवार्ड) दिया गया, डा० ओपी एस खोला, डा० जगदीश प्रसाद एवं डा० एसएल पाटिल को आईएएसडब्लूसी फैलो अवार्ड प्रदान किया गया। डा० एनके लेन्का को यंग वैज्ञानिक पुरस्कार एवं डा० जगदीश कुमार व डा० विश्वजीत मण्डल को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार दिया गया।

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

... क्योंकि जिंदा रहेगा सच

सांझ 18:33 बजे | सवेरा 06:21 बजे

सेंसेक्स 21755.32 | निफ्टी 6494.90

सोना 30350 | चांदी 44950

तापमान अधिकतम : 28°C | न्यूनतम : 13°C

देहरादून, रविवार 23 मार्च 2014 देहरादून संस्करण: वर्ष 13 अंक 292 पृष्ठ 12 आमंत्रण मूल्य 2.00 रुपया

E-mail:shahtimes2015@gmail.com चैत्र कृष्ण पक्ष 7 विक्रमी सम्वत् 2070 21 जमादुलअव्वल 1435 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

भीतरी पन्ने

तेंदूपत्ता चुनने वाली महिलाओं से मिले राहुल गांधी

अब करीना भी लिखना चाहती हैं किताब

टी-20 की जंग में कैरेबियाई तूफान को रोकने उतरेगा भारत

मृदा व जल संसाधन संरक्षण को कृषक प्रथम पर संगोष्ठी

प्रयोग समय की मांग के अनुरूप अपनाएं

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। 'मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में विभिन्न क्षेत्रों से आए किसानों ने अपने अनुभव बांटे और वैज्ञानिकों के साथ विचार विमर्श किया।

भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संघ एवं केंद्रीय मृदा व जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान दून द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय बारानी क्षेत्र कृषि प्राधिकरण दिल्ली के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डा. जेएस सामरा ने नये प्रयोगों को समय की मांग, जलवायु परिवर्तन तथा सामाजिक आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुरूप अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों को उनके योगदान को पुरस्कार वितरित किए। डा. एसआर

कृषि वैज्ञानिकों को पुरस्कार वितरित किए

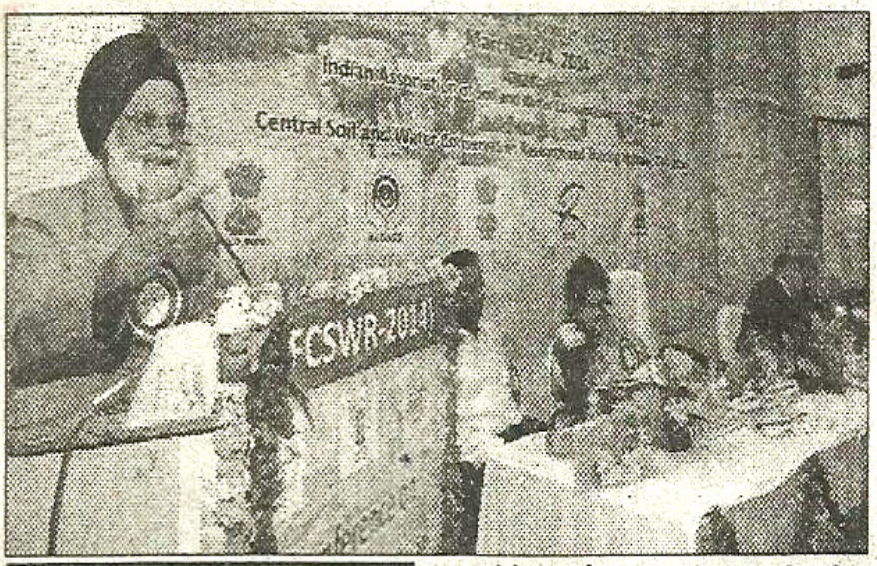

सिंह को लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड दिया गया। इसके अलावा डा. ओपी एस खोला, डा. जगदीश प्रसाद व डा. एसएल पाटिल को आईएएसडब्लूसी फैलो अवार्ड प्रदान किए गए। डा. एनके लेन्का को यंग वैज्ञानिक पुरस्कार एवं डा. अम्बरीश कुमार व डा. विश्वजीत मंडल को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार वितरित किए। संगोष्ठी में प्राकृति संसाधन प्रबंध भाकृअनुप उप महानिदेशक डा. एके सिक्का, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड हैदराबाद मुख्य कार्यकारी निदेशक डा. मधुमिता मुखर्जी, केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डा. पीके मिश्रा, प्रभागाध्यक्ष डा. जीपी जुयाल, डा. ओपी चतुर्वेदी, डा. एनके शर्मा, डा. चरण सिंह आदि मौजूद थे।

देहरादून व शिमला से एकसाथ प्रकाशित
वर्ष 66, अंक 305 आर.एन.आई. 2029/57
।।संस्थापक।। श्री एस.पी. पांथी
देहरादून, रविवार 23 मार्च 2014

हिमाचल टाइम्स

"मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम" संगोष्ठी का शुभारम्भ

हिमाचल टाइम्स संवाददाता, देहरादून। **भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संघ एवं केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून द्वारा संयुक्त रूप से "मृदा एवं जल संसाधन संरक्षण हेतु कृषक प्रथम" विषय पर उत्तरी क्षेत्र हेतु 22–24 मार्च, 2014 तक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।**

संगोष्ठी में, उत्तर भारत के पांच राज्यों (हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड एवं जम्मू और काश्मीर) के साथ–साथ दिल्ली एन सी आर एवं केन्द्र शासित चंडीगढ़ की समस्याओं व वहाँ से पधारे किसानों के अनुभवों के आधार पर प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, मृदा एवं जल संरक्षण, समेकित जलागम प्रबंध, संरक्षित कृषि, समेकित कृषि प्रणालियों इत्यादि पर विचार विमर्श किया जा रहा है।

यह संगोष्ठी अपने आप में अनोखी है जिसमें नवीन प्रयोग करने वाले किसानों का चयन किया गया है, जिनके विचारों एवं अनुभवों पर वैज्ञानिक एवं कार्यकर्ता विचार विमर्श करेंगे। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डा0 जे0एस0 सामरा, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, राष्ट्रीय बारानी क्षेत्र कृषि प्राधिकरण, नई दिल्ली ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इन नये प्रयोगों को समय की मांग, जलवायु परिवर्तन तथा सामाजिक–आर्थिक व्यवस्थाओं के अनुरूप अपनान पर जोर दिया। डा0 जे0 एस0 सामरा ने डा0 के0 जी0 तेजवानी की स्मृति में अपना भाषण प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि द्वारा उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों को उनके योगदान हेतु पुरस्कार वितरित किए गए। डा0 एस0आर0 सिहं को लाइफ टाईम अचीवमेंट (अवार्ड) दिया गया, डा0 ओ0पी0 एस0 खोला, डा0 जगदीश प्रसाद एवं डा0 एस0एल0 पाटिल को फैलो अवार्ड प्रदान किया गया। डा0 एन0 के0 लेन्का को यंग वैज्ञानिक पुरस्कार एवं डा0 अम्बरीश कुमार व डा0 विश्वजीत मंडल को सर्वश्रेष्ठ शोध पत्र पुरस्कार दिया गया।

डा0 ए0के0 सिक्का, उप महानिदेशक, प्राकृतिक संसाधन प्रबंध, भा0कृ0अनु0प0 एवं डा0 मधुमिता मुखजी, मुख्य कार्यकारी निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (छ्थ्क्ठ) हैदराबाद, संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि थे।

डा0 ए0 के0 सिक्का ने प्राकृतिक संसाधन प्रबंध तथा मृदा एवं जल संरक्षण से जुड़े मुद्दों पर अपने विचार वैज्ञानिकों के साथ बांटें। उन्होंने बहुत से संभावित उप–क्षेत्रों को आपस में समेकित करने पर बल दिया।

डा0 मुखर्जी ने मत्स्य पालन के क्षेत्र में जलागम प्रबंध एवं ग्रामीण विकास से जोड़ने तथा छ्थ्क्ठ द्वारा चलाई जारी गतिविधियों एवं उनकी संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने जलवायु की बाध्यताओं पर मत्स्य पालन प्रौद्योगिकियों के माध्यम से विजय पाने तथा बाजार–विपणन की समस्याओं पर भी प्रकाश डाला।

अपने स्वागत भाषण में डा0 पी0 के0 मिश्रा, निदेशक, केन्द्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून ने उत्तर पश्चिमी हिमालय क्षेत्रों में परंपरागत तकनीकी ज्ञान आधारित मृदा एवं जल संरक्षण विधियों का वर्णन किया।

आज दिनांक 22.3.2014 उद्घाटन समारोह में विभिन्न क्षेत्रों से पधारे किसानों ने अपने अनुभव बांटे एवं वैज्ञानिकों के साथ विचार विमर्श किया। इस अवसर पर प्रभागाध्यक्ष डा0 जी0 पी0 जुयाल, डा0 ओ0 पी0 चतुर्वेदी एवं डा0 एन0 के0 शर्मा व डा0 चरण सिहं इत्यादि भी उपस्थित थे। संगोष्ठी के आयोजक सचिव डा0 मुरूगानंदम् ने अंत में सबको धन्यवाद ज्ञापित किया।

facebook.com/amarujala twitter.com/amarujalanews amarujala.com/channels/downloads/

हरियाणा | दिल्ली | चंडीगढ़ | पंजाब | उत्तर प्रदेश | उत्तराखंड | हिमाचल | जम्मू-कश्मीर
नगर संस्करण वर्ष 18 अंक 26 पृष्ठ : 24+4 मूल्य : तीन रुपये

रविवार

देहरादून | 23 मार्च 2014

www.amarujala.com

7 राज्य
19 संस्करण

अमर उजाला

रविवार स्पेशल
अमर उजाला

मेहनत और तकनीक से कुछ किसानों ने बदल दी गांव की तकदीर

निराशा की जमीन पर खिलाए खुशहाली के फूल

रजा शास्त्री

देहरादून। 'कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं हो सकता-एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो।' दुष्यंत कुमार का यह शेर किसान हरविंदर सिंह, रंजीत सिंह वर्मा और रघुवरदत्त मुरारी की संघर्ष की कहानी में हकीकत नजर आया। हर कहानी एक मिसाल है। सिर्फ एक शख्स की कोशिश ने पूरे क्षेत्र को खुशहाल कर दिया। सीख भी दी कि पूंजी नहीं भी है तो भी एक छोटी शुरुआत बड़ी कामयाबी हो सकती है। इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियर्स के सभागार में शनिवार शाम मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र के कार्यक्रम के नजारे को किसानों की दास्तान ने दिलचस्प बना दिया। पेश है इन तीन किसानों की सक्सेस स्टोरी।

मिट्टी को बनाया सोना

किसान-हरविंदर सिंह, ग्राम-जोड़ापुर। शिक्षा-पढ़े-लिखे नहीं हैं। सात बीघा जमीन का चक, बेकार पड़ा रहता था। घास भी ढंग से न उगती। दूसरी जमीन बारिश पर निर्भर थी। बारिश हुई तो गेहूं हो जाता था। क्षेत्र में पानी के लिए एक पोखर था। परिवार पर गरीबी फन फैलाए खड़ी थी। बताते हैं कि कृषक गोष्ठियों में जाकर हल खोजा करते थे। एक दिन कुछ करने की ठानी। जमीन पर 20-20 फुट की दूरी पर आम के पेड़ लगाए। बीच की जगह में पपीता लगाया। लेकिन पैसे की फौरी जरूरत थी। इसके बीच जो जमीन बची उसमें टमाटर लगा दिया। एक इंच जमीन खाली न छोड़ी। खेत की मेड़ पर हाथी घास लगा दी, जो बिना पानी होती है। जानवरों को बहुत पसंद है। घास में पानी बहुत होता है। छह महीने में 10 हजार रुपये सब्जी से कमाए तो हौसला बढ़ गया। फिर ट्यूबवेल लगाया। गांव के सारे लोगों ने यही फार्मूला अपनाया है। इस वक्त घर में गाय-भैंस, ट्रैक्टर, कार है। दो बेटे डिप्लोमा कर रहे हैं।

रंजीत ने खुद खाद बनाकर उगाई सब्जी

देहरादून। *किसान-रंजीत सिंह वर्मा, ग्राम तटोल, जिला सोलन। शिक्षा-इंटरमीडिएट, आईटीआई।* रंजीत ने क्वालिटी वाली सब्जियों के लिए अपना जीवन वक्फ किया है। सब्जी के कारोबार से एक तो उन्होंने खुद अपने को खुशहाल किया और प्राकृतिक संसाधनों से ऐसी सब्जी उगाई जिसमें नुकसानदेह रसायन न हों। इसके लिए रंजीत खुद खाद बनाते हैं।

गोबर इकट्ठा करके उसमें केंचुए छोड़ देते हैं जो खाद बनाते हैं। इसके साथ ही गोबर, गौमूत्र और गुड़ डालकर भी खाद बनाते हैं। कहते हैं कि इस खाद से तैयार किया गया गोभी, मटर, गेहूं में पूरे पौष्टिक तत्व होते हैं। दूसरी रसायन की खाद से तैयार सब्जियों की तरह इसमें नुकसानदेह तत्व नहीं होते। सब्जियों की प्राकृतिक खुशबू रहती है।

गोभी एक हफ्ते तक फ्रेश रहता है। शुरु आत में लोगों ने भले ही मेरे कार्य को सनक कहा था लेकिन अब दूसरे भी इसे अपना रहे हैं। एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी पालमपुर के कृषि विज्ञानियों ने जब उनकी सब्जियों की जांच की तो भरपूर पौष्टिक तत्व निकले। बताते हैं कि अब उनका तरीका एक मॉडल के तौर पर यूनिवर्सिटी पेश करती है।

रघुवरदत्त ने जुगाड़ से जीते हालात

किसान-रघुवरदत्त मुरारी, ग्राम-लोहा घाट गांव (चंपावत)। शिक्षा-एमए (इतिहास)। घर के हालत खराब थे। एमए तो कर लिया लेकिन कंप्टीशन की तैयारी न कर सके। जो स्थिति थी उसी को सुधारने में जुटे। थोड़ी सी जमीन पर खेती शुरू की। पहाड़ की ढलवां जमीन पर पानी न रुकता। पहली बार पॉली मल्च का प्रयोग किया। क्यारीनुमा खेत में मल्च बिछाते। जहां से पेड़ निकलता उतनी पॉलीथिन काट देते। बताते हैं कि इससे फायदा यह हुआ कि खर-पतवार नहीं उगते। जमीन में नमी बनी रहती। निराई-गुड़ाई की भी जरूरत नहीं। अधिक बारिश होने पर पौधे और मिट्टी नहीं बहती। पहली बार 1080 पौधे लगाकर 15 कुंतल शिमला मिर्च पैदा की। मल्च से पौधा अधिक देर तक टिका रहता है। पैदावार पांच से छह गुना अधिक होती है। इसके साथ ही मुर्गी पालन, मत्स्य पालन को खेती से जोड़ा। ग्रास कार्प मछली पालते हैं जो गोभी का पत्ता खाती हैं। मुर्गियों का बचा फीड तालाब में डालते हैं कुछ मछली खाती हैं और कुछ पानी में घुल जाता है। इस पानी से सिंचाई करते हैं जिससे फसल उपजाऊ हो जाती है। अपनी तकनीक दूसरों को सिखाने के लिए फार्म स्कूल का संचालन कर रहे हैं।

7 Meeting held to discuss Gorkha Community's issues

8 Conference on Farmers First for CSWCRTI begins

16 Mehta resolves to conduct national level tournament in Doon

The Premier English Daily

Garhwal Post

For Tomorrow's People!

www.garhwalpost.in | Vol. VIII No. 261 DEHRADUN | Sunday, 23 March, 2014 | Pages 16 | Price ₹ 1

Conference on Farmers First for CSWCRTI begins

By OUR STAFF REPORTER

DEHRADUN, 22 March: The Indian Association of Soil and Water Conservationists (IASWC) and Central Soil and Water Conservation (CSWCRTI, ICAR), Dehradun are jointly organising the conference, Farmers First for Conserving Soil and Water Resources in Northern Region (FFCSWR-2014) during 22-24th March 2014.

The Conference addresses natural resource management, soil & water conservation, integrated watershed management, conservation farming, integrated farming systems, etc. with the focus on issues and experiences of farmers from 5 States of Northern India (Haryana, Punjab, Himachal Pradesh, Uttarakhand and Jammu and Kashmir) besides NCR of Delhi and UT of Chandigarh.

The conference is unique in its program that chosen innovative farmers are sharing their ideas and experiences with scientists and other stakeholders. The conference was inaugurated 10 AM at the Institution of Engineers (India), near ISBT on Delhi Road by the Chief Guest Dr JS Samra, Chief Executive Officer (CEO), NRAA, New Delhi.

The Chief Guest distributed exemplary awards to eminent agricultural scientists. Life time achievement award was given to Dr SR Singh, Dr OPS Khola, Dr Jagdish Prasad and Dr SL Patil received the Fellow Award of the IASWC, Dr NK Lenka received young Scientist Award and best paper award was given to Dr Ambrish Kumar and Dr Biswajit Mandal.

Dr AK Sikka, Deputy Director General (DDG), Natural Resource Management (NRM, ICAR) and Dr Madhumita Mukherjee, Executive Director, National Fisheries Development Board (NFDB), Hyderabad were the Gusts of Honour during the inaugural function. Dr Sikka addressed the farmers and scientists on various issues of natural resource management and soil and water conservation. He called for the integration of many possible sub-sectors into watershed management programs and rural development.

Dr Mukherjee briefed the activities and scope of the NFDB for the development of fisheries in northern region, particularly wherever water resources exist. She emphasised the need of climate resilient fisheries technologies and development of market facilities for fisheries products in the region. She called for the introduction of fisheries interventions in watershed management programs.

The inaugural function was attended by the innovative farmers, State and Central government agencies, renowned scientists & technocrats, experts from Krishi Vikas Kendra (KVKs), NGOs etc. Various Central and State agencies like National Rainfed Area Authority (NRAA), New Delhi, Indian Council of Agricultural Research (ICAR), National Fisheries Development Board (NFDB), Hyderabad, National Biodiversity Authority (NBA), Chennai, NABARD, Mumbai, Science and Engineering Research Board (SERB) of DST, New Delhi and Department of Land Resources (DoLR), Ministry of Rural development, New Delhi took part in the conference.

Earlier Dr PK Mishra, Director, CSWCRTI welcomed the participants and briefed the core programs of the conference. He also spoke on the importance of farmers innovations and initiatives in developing newer technologies and promoting the adoption of developed technologies.

Over 200 participants including 60 innovative farmers from the partner States were participated in the conference. On first day of the conference, two technical sessions addressing Uttarakhand and Himachal Pradesh were concluded. In the two sessions 3 lead speakers and 13 innovative farmers from the States spoke on various issues of farming and resource conservation. Dr AK Singh, Zonal Project Coordinator, Kanpur, Dr PK Mishra, Director, CSWCRTI, Dehradun and Dr AK Tiwari, Head, Research Centre, CSWCRTI, Chandigarh delivered lead lectures. Also 20 research papers in posters were presented. While thanking the innovative farmers, participants and sponsors of the conference, Dr M Muruganandam, Organising Secretary emphasised that soil and water are living things on which all other living things sustain need to be conserved by one and all. Multi-disciplinary interventions are needed to harness best possible outputs from available resources.

Published from Dehradun & Shimla | 66th Year of publication | Founded by S.P Pandhi
VOL. LXV No. 365 RNI No. 15357/67
DEHRADUN ● SUNDAY ● MARCH 23, 2014
The Himachal Times
Pages 8 ₹ 1.00

P-8 I don't have a Facebook page: Alia Bhatt

RUPEE DOLLAR SENSEX NIFTY Gold Silver

Conference on Farmers First for Conserving Soil and Water Resources begins

DEHRADUN, MARCH 22 (HTNS)

The Indian Association of Soil and Water Conservationists (IASWC) and Central Soil and Water Conservation (CSWCRTI), Dehradun are jointly organising the conference, Farmers First for Conserving Soil and Water Resources in Northern Region (FFCSWR-2014) from Mar 22-24.

The conference addresses natural resource management, soil and water conservation, integrated watershed management, conservation farming, integrated farming systems, etc. with the focus on issues and experiences of farmers from five states of Haryana, Punjab, Himachal Pradesh, Uttarakhand and Jammu and Kashmir besides Delhi and Chandigarh.

The conference was inaugurated at the Institution of Engineers (India), near ISBT, here today by the Chief Guest Dr J S Samra, Chief Executive Officer (CEO), NRAA, New Delhi.

Dr Samra delivering the Dr KG Tejwani Memorial Lecture, called for the revision of interventions as per the needs of time, changing climate and socio-economic set ups. He distributed awards to eminent agricultural scientists. Lifetime achievement award was given to Dr S R Singh, Dr O P S Khola, Dr Jagdish Prasad and Dr S L Patil received the Fellow Award of the IASWC. Dr N K Lenka received Young Scientist Award, and Best Paper award was given to Dr Ambrish Kumar and Dr Biswajit Mandal. Dr A K Sikka, Deputy Director General, Natural Resource Management (NRM, ICAR) and Dr Madhumita Mukherjee, Executive Director, National Fisheries Development Board (NFDB), Hyderabad were the Guests of Honour during the inaugural function.

Dr Sikka addressed the farmers and scientists on various issues of natural resource management and soil and water conservation. He called for the integration of many possible sub-sectors into watershed management programs and rural development.

Dr Mukherjee briefed the activities and scope of the NFDB for the development of fisheries in northern region, particularly wherever water resources exist. She emphasised the need of climate resilient fisheries technologies and development of market facilities for fisheries products in the region.

The inaugural function was attended by the innovative farmers, state and central government agencies, scientists and technocrats, experts from Krishi Vikas Kendra (KVKs), NGOs etc.

Various central and state agencies like National Rainfed Area Authority (NRAA), New Delhi, Indian Council of Agricultural Research (ICAR), National Fisheries Development Board (NFDB), Hyderabad, National Biodiversity Authority (NBA), Chennai; NABARD, Mumbai, Science and Engineering Research Board (SERB) of DST, New Delhi; and Department of Land Resources (DoLR), Ministry of Rural Development, New Delhi; took part in the conference.

Earlier Dr PK Mishra, Director, CSWCRTI welcomed the participants and briefed the core programme of the conference. He also spoke on the importance of farmers' innovations and initiatives in developing newer technologies and promoting the adoption of developed technologies.

Over 200 participants including 60 innovative farmers from the partner states participated in the conference. On first day of the conference, two technical sessions addressing Uttarakhand and Himachal Pradesh were concluded. In the two sessions, three lead speakers and 13 innovative farmers from the states spoke on various issues of farming and resource conservation. Dr AK Singh, Zonal Project Coordinator, Kanpur, Dr PK Mishra, Director, CSWCRTI, Dehradun and Dr AK Tiwari, Head, Research Centre, CSWCRTI, Chandigarh delivered lead lectures. Also 20 research papers in posters were presented.

While thanking the innovative farmers, participants and sponsors of the conference, Dr M Muruganandam, Organising Secretary emphasised that soil and water are living things on which all other living things sustain need to be conserved by one and all. Multidisciplinary interventions are needed to harness best possible outputs from available resources.